XIX/125

प्र० Balrampur (Gonda)
8.1.41

चि॰ पद्मकान्त जी - आशीर्वाद

आज बड़े भाई साहब के पत्र द्वारा दुःखद भाई श्री कान्त जी के मृत्यु का समाचार पढ़ कर हम लोगों की जो दशा है वह तुमको क्या लिखें - कुछ कहा नहीं जाता कि यह क्या हो गया - हम लोगों के खानदान से एक महान व्यक्ति निकल गया - श्री भाई जैसे सहृदय मनुष्य बहुत ही कम होते हैं - परमात्मा ने इनको हम लोगों से क्यों छीन लिया यह कुछ समझ में नहीं आता - अभी तो इनकी अवस्था भी कुछ ऐसी अधिक नहीं थी - हाय बुढ़िया चाची की क्या दशा होगी - किन शब्दों में तुमको तथा उनको सन्तोष देने का प्रयत्न किया जाय - बेटा! सब कुछ सोचते हुए फिर भी यही कहना पड़ता है कि जैसी भी हो हरि इच्छा वही करो - चिन्ता व अधिक दुःख करने में भी कोई लाभ नहीं है - तुम तो स्वयं सब कुछ समझते हो तुमको हम क्या लिखें तुम तो एक वीर पिता के वीर पुत्र हो तुमको तो ऐसे समय परम साहसी हो जाना चाहिये तुम्हारे दुःखी होने से तुम्हारी दादी

राष्ट्रीय अभिलेखागार
भारत
National Archives
of India

तुम्हारी चिट्ठी दोनों को कोई भी सहारा
से मोह न आ नहीं रह जायगा - इसलिए बेटा!
तुम अपने को बहुत जल्द सम्हाल लेना
और अपने गृहस्थी के धन्धे में लग
जाना यही मनुष्य मात्र का कर्तव्य है
ज्यादा क्या लिखें इतने ही में तुम स्वयं
सब कुछ समझ लोगे। बहू या दादी को
हमारा आशीर्वाद देते ही रहना —

तुम्हारा पिता
बलदेव मालवीय

POST CARD

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE 9 PS NINE PIES 9 PS

ALLAHABAD DELY. 10 JAN 41

GONDA

Pandit
Padmakant Malaviya
Muhalla Kucha Sawal Das
Bharti Bhawan
Allahabad

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India